P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका

अंशु सत्यार्थी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

आज के कुछ वर्षों के पूर्व अध्यापक शिक्षा का अर्थ प्रशिक्षण तक ही सीमित था पर अब अध्यापकों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया गया। अध्यापक का समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह ज्ञान को हस्तान्तरित करने के साथ ही प्राविधिक कुशलता भी बनाये रखता है और ज्ञान के दीप को आलोकित करता है। अध्यापक केवल एक व्यक्ति का ही दिशाबोध नहीं करता अपितु सारे राष्ट्र को दिशा बोध कराता है। इसके लिए आवश्यक है कि राष्ट्र को दिशा बोध कराना है। इसके लिए आवश्यक है कि राष्ट्र के अध्यापकों की कठिनाईयों व भावनाओं से अवगत होना चाहिए। योग्य अध्यापकों का देश एक ज्वलन्त भविष्य का देश है।

युग निर्माता, राष्ट्र निर्माता
होता है आज का शिक्षक
जिस पर उम्मीदें टिकी होती है
आज के समाज की।

मुख्य शब्द : शिक्षक, बालक, प्रशिक्षण, जिज्ञासा

प्रस्तावना

जिस प्रकार हमने शिक्षक, छात्र के बारे में गम्भीरता से विचार उसी प्रकार यह जानना जरूरी है कि शिक्षण किसे कहते हैं। मैं शिक्षण के अर्थ पर प्रकाश ड़ालना चाहूँगी। शिक्षण का अर्थ और परिभाषा शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है। जिसके द्वारा शिक्षक अपने ज्ञान को संप्रेषणीय कुशलता के आधार पर अपने विद्यार्थियों को उस ज्ञान से आत्मसात कराता है। सरल शब्दों में कहा जाय तो शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है। जिससे बालक के अन्दर उपस्थित अंतर्निहित शक्तियों को विकसित किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

जैसा कि आप जानते है कि जब से इस सृष्टि का निर्माण हुआ है तब से शिक्षा उत्पन्न है। व्याक्ति विशेष सीखता है प्रतिफल, छोटी–छोटी अनुभूतिया सिखाता है मानव को पग–पग पर शिक्षक का उसी समय से इस समाज के जन्म हुआ। मेरे कहने का तात्पर्य है कि शिक्षक शिक्षा व समाज एक दूसरे के पूरक है। जिज्ञासा व्यक्ति में प्रतिपल रहती है। जैविक विकास की प्रक्रिया में ऐसे प्राणी का उद्भव (विकास) हुआ जो अन्य सब जीवो के सर्विधिक विकसित माना जाता है। ऐसे मानव जाति में अनेक विशेष क्षमताए है। जिनमें एक अत्यन्त महत्व पूर्ण शक्ति विकसित हुई। जिसे साधारण भाषा में सीखना कह सकते है। मनुष्य न केवल पूरा जीवन सीखाता है। परन्तु उसके सीखाने की क्षमता भी प्रकृति के शेष सभी जीवो से सर्विधिक विकसित है। इसी अद्वितीय क्षमता के कारण सामान्य धारणा बनी है। कि मनुष्य का जन्म केवल मात्र जीने के लिए नही है। परन्तु उनके जीवन का उददेश्य अपने जीवन काल में ही अपनी मनुष्यता को विकसित करने का भी है। स्वामी विवेकानन्द जी ने कोरे मन की अवधारणा को नकारते हुए बार–बार कहा कि सम्पूर्ण ज्ञान को मनुष्य के अन्दर ही उपलब्ध है। केवल उसको प्रस्फुटित होने के अवसर चाहिए। इस सन्दर्भ में स्वामी जी ने कहा समस्त ज्ञान मनुष्य के अन्दर ही है, कुछ भी ज्ञान बाहर से नही आता ये सब अन्दर ही हैं मतलब मेरे कहने का तात्पर्य यह है। कि यह विषय मैने इसीलिये चुना कि समाज में एक नई लहर चला सकू, समाज को नयी दृष्टि दूँ व्यक्ति क्योकि सामाजिक प्राणी है। शिक्षक भगवान से भी बढकर माना है। गुरू की तुलना तो बडो–बडो को मात दिलाती है। इसलिए शिक्षक के व्यक्तित्व को और निखारने के लिए मेने इस विषय को चुना। आज स्वामी जी कहते है। कि सम्पूर्ण ज्ञान मनुष्य में ही उपलब्ध है। तो कई प्रश्नो के उत्तर स्वंय मिल जाते है। यह समझ में आता है कि बीज पेड कैसे बना। आज शिक्षा जगत समाज की मूल्य हीनता पर बहुत चर्चा हो रही है और कई प्रकार के प्रकल्प (विकल्प) चलाये जा रहे है। जिसमे शिक्षा के क्षेत्र में मानव मूल्यो को

स्थापित करके समाज में भ्रष्टाचार और दुराचार आदि बुराईयो को दूर किया जाय। परन्तु मूल में जाने में समझ में आता है। कि मूल्यो के हास का सम्बन्ध धर्मविहीन शिक्षा से ही है। इस प्रकार एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमे प्रकृति के नैसर्गिक और शाश्वत मूल्यो के ह्रास का सम्बन्ध धर्म विहीन शिक्षा से ही है। इस प्रकार से एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसको धर्म निरपेक्षता के नाम से धर्मविहीन का चोला पहना दिया गया हो। और ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमे प्रकृति के नैसर्गिक और शास्वत मूल्यों का समावेश हो दोनो में शिक्षक की भूमिका बिल्कुल भिन्न होती है। एक प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक विद्यार्थियो को धर्म से परहेज करना सिखायेगा। इस विषय में स्वमी विवेकानन्द के अमेरिका के प्रथम भाषण में जो उन्होने कहा था कि वे उस समाज का प्रतिनिधित्व कर रहे है। जो अपने से भिन्न धर्मो का केवल मात्र सहते ही नही परन्तु उनके मन में सब धर्मो के लिए सम्मान है। और वे जानते है कि सत्य सब धर्मो मे है। सक्षेप में यदि कहा जाये तो शिक्षक की भूमिका व उददेश्य उसका मुख्य शब्द शिक्षा ही है। शिक्षा सुचारू रूप से चले इस पर विशेष जोर देना चाहती हूँ। विद्यार्थी की पूर्णता का विकास करने के लिए शिक्षक को ज्ञान का वितरण व विर्सजन नही करना है। परन्तु उसको तो विद्यार्थी के माध्यम से ज्ञान के पट खुलवाने है। और नितनये पट खुलवाने है। नये द्वार खेलने की प्रेरणा तभी आ पायेगी जब कुछ नया प्राप्त करने की जिज्ञासा है। इस लिए अध्यापक का कार्य विद्यार्थियो के लिए नये ज्ञान को प्राप्त करने की प्रेरणा देना है। तो उसके लिए सब से अधिक प्रभावी साधन है। जिज्ञासा उत्पन्न करना ध्याान रखना होगा कि जो स्वंय जिज्ञासु है। वह ही जिज्ञासा उत्पन्न करने की क्षमता रख सकता है। इसलिए शिक्षक सदैव विद्यार्थी रहे। ज्ञान का भिक्षु व पिपासु रहे और विद्यार्थियों के साथ मिलकर जिज्ञासाओ का समाधान न करे परन्तु करवरये। स्वमी जी के निम्न पक्तियो को इस सन्दर्भ में उल्लेखित करना प्रासंगिक है।

थोडा ईश्वर का स्मरण
थेडा उसका भरोसा सीखो
सत्य के लिए जोखिम उठाना सीखो
थोडा साहस करना सीखो

विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धन्तो के आधार पर रचित शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक के उददेश्य, मुख्य शब्द सांराश इस प्रकार परिभाषित किया है।

1. शिक्षक विद्यार्थीयो के ज्ञान की जागृति का संचारक ही बने।
2. शिक्षक नवीन ज्ञान को अर्जित करवाने का संवाहक बने।
3. विद्यार्थी के विकास में शिक्षक Faciliator बने।
4. शिक्षक ज्ञान का उपासक।
5. विद्यार्थी और शिक्षक में भक्त और भगवान जैसा सम्बन्ध।
6. शिक्षक जिज्ञासु होते हुए सदैव शौधार्थी रहे।
7. प्रकृति के शाश्वत नियमो कि प्रतिपादन का शिक्षक कर्ता पुरूष बने।
8. शोध के कार्यो मे शिक्षक पर्यवेक्षक की भूमिका न निभाकर सहयोगी शोधार्थी की भूमिका में रहे।

शिक्षण का अर्थ

शिक्षण शब्द अंग्रेजी शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है जिसका अर्थ है सीखना। डा0 राधाकृष्णन ने कहा है कि शिक्षा को मनुष्य और सम्पूर्ण समाज का निर्माण करना चाहिए। इस कार्य को किये बिना शिक्षा अनुविक और अपूर्ण है।''

शिक्षण का संकुचित अर्थ

शिक्षण के संकुचित अर्थ का आशय है कि एक ऐसा शिक्षण जो निश्चित समय, निश्चित स्थान आदि में प्रदान की जाती है। उदाहरण के लिए जैसे विद्यालयी शिक्षा।

शिक्षण का व्यापक अर्थ

मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक जिन चीजों को सीखता है। वह शिक्षण के व्यापक अर्थ के अंतर्गत आता है। शिक्षण का व्यापक अर्थ का तात्पर्य है कि औपचारिक और अनौपचारिक ढ़ंग से बालक जीवन भर सीखता है।

शिक्षण की परिभाषाएं

बी॰ ओ॰ स्मिथ के अनुसार– ''शिक्षण अधिगम को उत्प्रेरित करने वाली एक पद्धति है।''

रायबर्न के अनुसार– ''शिक्षण एक प्रकार के ऐसे सम्बन्ध है। जो बालक को उसकी अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित करने में उसकी सहायता करते हैं।''

ए॰ एल॰ गेज के अनुसार– ''शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है। जिसका उद्देश्य दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना है।''

बटर्न के अनुसार– ''शिक्षण अधिगम का उद्दीपन निर्देशन और प्रोत्साहन है।''

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षण हमारे जीवन की महत्वपूर्ण ईकाई है। जिसमें शिक्षक शिक्षण छात्र में अंतसंबंध गहरा रहता है। इन तीनों का हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है।

इस प्रकार किसी भी कड़ी का कमजोर होना समाज को गर्त में ले जाना है। अब हम आधुनिक युग में शिक्षक की क्या भूमिका है। इस पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका

आधुनिक युग के शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ प्रदर्शक होता है। जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता है। भारतीय संस्कृति में शिक्षक को दो स्वरूपों में देखा जाता है। जिन्हें अत्याधुनिक गुरु और लौकिक गुरु के रूप में परिभाषित किया गया है। चूँकि बात शिक्षक दिवस के प्रसंग जुड़ी है। इसलिए यहाँ लौकिक स्वरूप में शिक्षक के बारे में चर्चा करना प्रासंगिक है। गुरु के बारे में यह कहना चाहूँगी–

गुरु, गुरु, गुरु दीपक साजलता है गुरु फैलाने ज्ञान का प्रकाश न भूख उसे किस दौलत की न कोई लालच न आस

उसे चाहिए हमारी उपलब्धियां, ऊंचाईयां जहाँ हम जब खड़े होकर उनकी तरफ देखे पलटकर तो गौरव से उठ जाए सर उसका हो जाये सीना चौड़ा ऐसा है हमारा गुरु

पर आप आज क्या यह बात सही मानते हैं। तो आप जरा सोचिये। विचार विमर्श करये। क्या वह अपने पद के साथ सही न्याय करता है। पर फिर भी शिक्षक को आज गुरु की तरह से पूजा जाता है। शिक्षक को मौजूदा परिप्रेदय के रूप में ही देखा जाता है। यद्यपि सामाजिक व्यवस्था में परे उसकी सेवा है। इसलिए शिक्षक को अध्यापक तक ही सीमित कर दिया गया है। यद्यपि इसे व्यापक अर्थों में देखा जाना चाहिए। जैसे कि शिक्षक का शाब्दिक अर्थ शिक्षा देने वाला या शिक्षा देने से है। लेकिन इसकी आधारशिला शिक्षक रखता है। शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूजनीय रहा है। क्योंकि उन्हें गुरु कहा जाता है। लेकिन अब जबकि सामाजिक व्यवस्थाओं का स्वरूप बदल गया है। इसलिए शिक्षक भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं है। आज शिक्षक कहीं प्रोफेसर सभरवाल के रूप में अपने शिष्यों से पूजा नहीं जाता बल्कि जीवन से हाथ धोता है। तो कहीं लव गुरु होकर समाज में तिरस्कृत होता है। यह न तो शिक्षक के लिए हमारा गरिमापूर्ण आचरण है। और न ही शिक्षक का सम्मानजनक आचरण। शिक्षक के कुछ पहलुओं में गम्भीरता से चर्चा करना चाहूँगी।

कल और आज के आधुनिक शिक्षक

शिक्षक को समाज की नींव या रीढ़ की हड्डी कहा जाता है क्योंकि वे हमारे चरित्र निर्माण, भविष्य को आकार देने में और देश का आदर्श नागरिक बनने में हमारी मदद करते हैं।

माता–पिता बच्चे को जन्म देते हैं। उनका स्थान कोई नहीं ले सकता। उनका कर्ज म किसी भी रूप में नहीं उतार सकते। लेकिन शिक्षक ही है जिन्हें हमारी भारतीय संस्कृति में माता–पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है। क्योंकि शिक्षक ही हमें समाज में रहने योग्य बनाता है।

आज जबकी आप जानते है कि समाज हर क्षेत्र में आगे बढ रहा है। चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो, अर्थिक हो, राजनैतिक क्षेत्र हो व अन्य क्षेत्र में हमारा समाज बहुतायत से आगे बढ रहा है।

समाजिक परिवेश में रहना, जीना
समाजिक परिवेश में अपने पंख फहराना
ऐसा है हमारा समाज

आज शिक्षक, शिक्षा के आदर्शो पर आगे अपने कदम बढाते हुए आदर्श मानव जीवन की स्थापना में अपनी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका के निभा रहा है। लेकिन ऐसे भी शिक्षक है। जो शिक्षक व शिक्षा के नाम को कलंकित कर रहे है। बच्चो को पढाते ही नही है। अपने पद का गलत प्रयोग करते है। अपने पद से न्याय भी नही कर पा रहे है। दिखाते कुछ है समाज में करते कुछ है। ऐसे शिक्षको ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है। जिससे हम गरीब विद्यार्थियो को शिक्षा से वंचित रहना पडता है। और उसे धन के आभाव में अपनी पढाई छोडनी पडती है। आज जबकि समाज निरन्तर आगे बढ रहा है। जो हमें कितबी ज्ञान ही नही जीवन में आगे बढने की कला भी सिखाता है।

आज के समय में शिक्षा बाजारवाद में होती परिवर्तित

आज के समय में शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण में हो गया है। शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण देश के समक्ष बड़ी चुनौती है। पूराने समय में भारत में शिक्षा कभी व्यवसाय या धंधा नहीं थी। आजकल तो विद्यादान देने वाले सर कहे जाते हैं। वो दक्षिणा के रूप में एक बड़ी रकम लेकर शिष्यों के सर में किताबी ज्ञान भर देने भर से ही मतलब रखते हैं।

प्राचीन काल में तपस्वी गुरु और आज के रुपये के पीछे भागने वाले सर या मैडम में जमीन आसमान का अन्तर है। आज के शिक्षकों की कर्तव्यनिष्ठा पर आइये जरा विचार करें। सरकारी स्कूलों के अधिकतर शिक्षक अपने बच्चों को सरकारी स्कूलो में न पढ़ाकर प्राइवेट स्कूलों में पढ़ाते हैं। क्योंकि इन्हें खुद सरकारी स्कूलों की पढ़ाई पर विश्वास नहीं है। पढ़ाने के मामले में ये कर्तव्यनिष्ठ नहीं है। इसलिए इन्हें अच्छी तरह से मालूम है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई कैसी होती है गली–गली में निजी स्कूलों का खुलना उसमें दाखिले के लिए आम जनता की भागदौड़ उसका बड़ी सफलता से चलना इस बात का सूचक है।

सरकारी स्कूलों में वेतन के रूप में हर माह एक बड़ी रकम देने वाले और ताल तिकड़म से सर्वश्रेष्ठ शिक्षक का मेडल तक पा लेने वाले शिक्षक और शिक्षा को महज कमाई का जरिया बना आम जनता को लूटने वाले निजी स्कूल आज कितने राम, लक्ष्मण, कृष्ण, अर्जुन, चन्द्रगुप्त, भगतसिंह, गाँधी जैसे महापुरुष पैदा कर रहे हैं। यह तो बच्चों को स्वार्थी और संस्कारहीन बना रहे हैं।

शिक्षक ही समाज का शिल्पकार

शिक्षक समाज का शिल्पकार है यह कथन पूर्णतया सत्य है जिस प्रकार से लकड़ी का काम करने वाला लकड़ी को किसी भी प्रकार का आकार देकर उसे सही आकार देता है जैसे मेज–कुर्सी, ड्रेसिंग–टेबिल, अलमारी व अन्य चीजें बनाता है उसी प्रकार से कुम्हार हर प्रकार के मिट्टी के बर्तन को कसी भी आकार में बर्तन बनाता है। उसी प्रकार से शिक्षक हमारे समाज को पेड़–पौधों की तरह सींचता है। उनको जीवन में जीने की कला सिखाता है। इस कार्य में अहम भूमिका शिक्षक की है। इसलिए शिक्षकों को शिल्पकार की श्रेणी में रखा गया है। जैसे–

भारत में शिक्षक की भूमिका

वर्तमान सन्दर्भ

आज जब भारत की साक्षरता दर लगभग 15 प्रतिशत है केरल राज्य में अधिकतर लगभग 94 प्रतिशत साक्षरता दर है और बिहार राज्य में दर लगभग 64 प्रतिशत है। तो स्वाभाविक ही मन में अपने देश भारत में आज के सन्दर्भ में शिक्षक की भूमिका के बारे में विचार उठते हैं और हम अपने देश एवं विश्व में शिक्षा के सर्वोच्च महत्व के साथ ही शिक्षक के सर्वोच्च महत्व को समझ सकते हैं।

बालक बालिकाओं को इस समाज रूपी
चमन से बड़े प्यार से तरासकर उनका

सर्वागींण विकास करना उनके दुर्गुणों, शैतानियों, गलतियों को दर किनार कर फूलों की तरह सहेजना ऐसा है हमारा शिक्षक

शिक्षक का परिचय

विश्व गुरु के नाम से प्रसिद्ध हमारा देश भारत आज की शिक्षा के नये आयाम छू रहा है फिर चाहे वह विद्यालयी शिक्षा हो या महाविद्यालय, विश्वविद्यालय में प्रदान की जाने वाली औपचारिक और अनौपचारिक आधुनिक शिक्षा ही हो, शिक्षण में शिक्षक और शिक्षिका की निरन्तर बढ़ती और कई ऊँचाईयाँ छूती भूमिका को आज कौन नकार सकता है ?

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार *''शिक्षक का स्तर किसी समाज के सामाजिक सांस्कृतिक लोकाचार को दर्शाता है।.....''* यह सच ही कहा गया है। कि कोई भी व्यक्ति अपने शिक्षक के स्तर से अधिकतर ऊपर नहीं जा सकता है। यह भी वास्तविकता है कि भारत सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अपनायी जाने वाली नीतियां और योजनायें केवल प्रशिक्षित कुशल समर्थ और समर्पित शिक्षकों के प्रयास से ही साकार हो सकती हैं यदि हमें अपने देश को एक विकासशील देश बनाना है तो इसकी पहली शर्त है 100 प्रतिशत साक्षरतादर को प्राप्त करना है। और आज हमारे शिक्षक इस दशा में अपना पुरजोर योगदान दे रहे हैं।

शिक्षक समाज की महत्वपूर्ण ईकाई

शिक्षक जिसे गुरू से भी बढकर माना जाता है। वह हमारे समाज की एक महत्वपूर्ण ईकाई है। वह एक सुदृढ और विकास शील देश की मजबूत नीव है। माता–पिता जो समाज की प्रथम पाठशाला है। जिससे बच्चा पढना लिखना, चलना संस्कार पाना ये सारे गुण वह अपने माता–पिता से ग्राहय करता है। उसी तरहा से शिक्षक बच्चो के ज्ञान और जीवन मूल्यो का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। समाज का भविष्य शिक्षको के हाथ में पूरी तरह से सुरक्षित होता है, इसलिए शिक्षको को उसी तरह से माना गया है। जैसे किसान खेत में हल जोतता है। बीज रोपता है। अपने खेत का पूरी तरहा से ध्यान रखता है। उसी तरह से शिक्षण के कंधो पर भावी बच्चो का पूरा भार जिसे कहना चाहिए उनका उद्धार एक शिक्षक ही कर सकता है।

एक अच्छे शिक्षक के दायित्व

एक अच्छे शिक्षक का हमारे समाज में महत्वपूर्ण दायित्व होता है। शिक्षक का कर्तव्य होता है। जब से बच्चा संस्था से जुडता है तब से लेकर अंत तक यानि B.A M.A Phd Net या किसी भी फोर्म को भरना है। या उसे अपने जीवन में क्या बनना है। जब वह हर तरफ से सशंय में रहता है। तो सही रास्ता एक आदर्श शिक्षक ही दिखता है। बच्चे के व्यक्तित्व विकास या संर्वागीण का दाययित्व एक शिक्षक पर ही होता है।

शिक्षक का हर क्षेत्र में महत्व

किसी भी शिक्षा प्रणाली या शिक्षा योजन की सफलता या असफलता शिक्षा के क्षेत्र के सूत्रधार शिक्षको के रवैये पर ही निर्भर करता है। शिक्षक चाहे तो अपने छात्र को आगे बढा सकता या उसके द्वारा जीवन को गर्त में ले जाने का कार्य भी शिक्षक के द्वारा ही होता है।

आज जबकी हमे देश के सुनहरे भविष्य का निर्माण करना है। इस कार्य में प्राथमिक स्कूल के शिक्षक लगातार सकारात्मक भूमिका निभा रहे है। मै इस विषय पर विचार विमर्श करना चहती हू कि प्रथमिक स्कूल के बाद माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूल भी छात्र/छात्राओं के व्यक्तित्व निर्माण में महत्व पूर्ण भूमिका निभा रहे है। आज जब हम स्कूल की बात करे तो शिक्षक एक महत्वपूर्ण शिक्षण बच्चो को दे रहे है।

शिक्षक शिक्षा और शिष्य के आत्मीय एक निकनिकटतम सम्बन्ध को तोडा ही नही जा सकता है। भले ही आज आधुनिक युग में शिक्षक का स्वरूप बदल रहा है। आज बच्चे शिक्षक से पढने की बजाय Net या google से पढना ज्यादा पसन्द कर रहे है।

आज के शिक्षक की बहुआयामी भूमिका

आज इंटरनेट युग में शिक्षक की भूमिका बहुआयामी हो गयी है। आज शिक्षक अपने विद्यालय में तो शिक्षा दे रहे है पर अन्य विद्यालयो में व बच्चो से सम्पर्क करके इंटरने के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा देते वह जिला प्रस्त राज्य राष्टª और अर्न्तारष्टªीय स्तर पर बखूबी भूमिका निभा रहे है।

21वीं सदी में शिक्षक की भूमिका

21वीं सदी के इस देश में अध्यापक की भूमिका पहले से अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षण के क्षेत्र में आने वाले युवाओं को एक अच्छा शिक्षक बनने का प्रयास करना चाहिए। स्कूल कॉलेजों में शिक्षा ग्रहण करने आ रही पीढ़ी को बड़ी ही अपेक्षाओं को पूरा करने व उन्हें सही दिशा देने में शिक्षक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पर मौके पर उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए शिक्षण के महत्व अध्यापक की भूमिका एवं विद्यार्थियों के लक्षणों पर प्रकाश डाले।

शिक्षा पद्वति में परिवर्तन की आवश्यकता

शिक्षा किसी भी देश की विकास–प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। इसलिए मानव समाज में इसे उच्च प्राथमिकता दी है। शिक्षा द्वारा ही ज्ञान और अज्ञान के मध्य अंतर को समझकर मनुष्य सही दिशा की ओर बढ़ता है। तथा सम्यक ज्ञान के प्रकाश में जीवन का सर्वागींण विकास कर पाता है। परन्तु यह समुचित विकास का मार्ग अवरुद्ध होता प्रतीत होता है। तब ऐसा समझना बिल्कुल तर्कपूर्ण है कि प्रचलित शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है। ऐसी स्थिति में शिक्षा नीति में सुधार करना अनिवार्य हो जाता है।

हमारी वर्तमान शिक्षा पद्वति को देखते हुए निष्पक्ष भाव से निश्चित ही ऐसा कहा जा सकता है। यह निजीविसी हो गयी है। शिक्षा मनुष्य के जीवन के प्रत्येक चरण में उजागर होती है। और हमारे समाज में आज किस सीमा तक नैतिकता का पतन हो रहा है। उसे देखकर तो ऐसा लगता है कि हमारी शिक्षा–पद्वति अर्द्धविकसित है। बहुत संभव है कि पश्चात् शिक्षा–पद्वति के अनुकरण करने के कारण हम अपनी शिक्षा और संस्कृति को भूल रहे हैं। और नैतिकता के पतन की ओर

अग्रसर है उस पर नकल की प्रवृतिः जब नकल करने पर ही बल दिया जायेगा, तब बौद्धिक विस्तार किस प्रकार संभव है ?

प्राचीन भारतीय शिक्षा नीति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह मानी जाती है। कि वह नीतियों से परिपूर्ण थी। शिक्षा मनुष्य का सम्यक उत्थान करती है। नीति भी मूल रूप से शिष्ट आचरण का ही दिशा–निर्देश करती है। इस प्रकार हम देखते हैं। कि शिक्षा और नीति का मुख्य उद्देश्य एक ही है।

जिस प्रकार किसी वृक्ष की शाखाओं, पत्तों, फूलों और उनके फलों के विकास के लिए उस वृक्ष के मूल जड़ का स्वच्छ स्वस्थ रखना अनिवार्य होता है। उसी प्रकार मानव जीवन के कार्यक्षेत्र के प्रत्येक पहलू का नैतिक शिक्षा से भृष्टाचार को प्रत्यय मिलता है फिर शिक्षा ग्रहण करने अथवा न करने का कोई भी औचित्य नहीं रह जाता है।

किसी भी देश के स्वरूप वहां की शिक्षा व्यवस्था पर ही निर्भर करता है। अपने को ऊँचा उठाने या अपने को प्रतिष्ठित ररखने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के अधिक से अधिक किये जाने चाहिए (1) प्राथमिक (2) माध्यमिक (3) विश्वविद्यालय (4) महाविद्यालय इन चारो माध्यमो से शिक्षा प्रदान की जाती है। इन तीनो में माध्यमिक शिक्षा का स्थान सर्वोपरि है। माध्यमिक शिक्षा किसी भी राष्ट्र की नीव है। जिसकी मजबूती पर राष्टª खडा रहता है। इसी तरह से प्रथमिक शिक्षा की भी अहम भूमिका है। जहॉ बच्चा हर तरह के संस्कार सीखता है। उन्हे अपने जीवन में गडता है।

कहने का तात्पर्य है कि प्रथमिक शिक्षा हो या माध्यमिक दोनो का ही हमारे समाज में अलग अलग महत्व है। अगर यह पद्धतिया ठीक ठंग से चलायी जायेगी तभी हमारे राष्टª में पढ रहे बच्चे जो भावी शिक्षाक बनेगे या अन्य पदो पर जायेगे। जब उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास होगा।

इस प्रकार शिक्षा पद्वति में राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक सुधार के लिए अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। आवश्यकता है इस पर सच्ची लगन और ईमानदारी से अमल करने की। इस विडम्बना का मुख्य कारण शिक्षकों की शिथिलता भी है। शिक्षकों का काम छात्रों में जिज्ञासा की भावना जगाना है। जिसका आज सर्वथा अभाव देखा जा सकता है। इस दिशा में सुधार का प्रयत्न आवश्यक है। क्योंकि शिक्षक और छात्र में राष्ट्र की शक्ति निहित है। जिसके बिना एक कदम भी चलना असंभव है।

भाषा की समस्या भी हमारे सम्मुख सुरसा के समान मुंह फैलाये खड़ी है। भारत की विशालता के कारण यहां अनेक भाषाएं प्रचलित है। इसक अतिरिक्त पाश्चात्य भाषाओं का ही हम पर इतना ज्यादा प्रभाव है कि उसके मोह से शायद ही हम कभी मुक्त हो पायेंगे।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय शिक्षा में निरन्तर ह्रास का कारण है। अयोग्य व्यक्तियों को गलत प्रत्यय देना। आज विश्वविद्यालय गंदी राजनीति का क्रीड़ा–स्थल बन चुका है। यहाँ तक कि प्राध्यापकों की नियुक्ति अथवा प्रोन्नति भी राजनीति के आधार पर की जाने लगी है। मतदान केन्द्र पर कब्जा करने वाले छात्र प्रभावशाली माने जाते हैं। जबकि मेधावीं छात्र के पास बने रहते हैं। इन परिस्थितियों में सुधार लाकर ही शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाना संभव जान पड़ता है। योग्य शिक्षकों और छात्र–छात्राओं का होना एक सुदृढ़ विश्वविद्यालय की स्थापना करने का आधार बिंदु है।

हमें भारत के सुन्दर भविष्य की कामना करनी है तो शिक्षा का समुचित वातावरण तैयार करना होगा जहाँ स्वास्थय पुंद सांस लेकर नवयुवक छात्र अपना शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास कर सकें।

अध्यापक बना राष्ट्र निर्माता

यह कथन पूर्णतया सही है। कि अध्यापक राष्टª का निर्माता होता है। जैसे कि कहा जाता है–

गुरूर बृहमा गुरूर विष्णु
गुरू दीवो महेश्वरा
गुरू साक्षात परबृहमा
तस्मे श्री गुरूवे नमः

कि गुरू बृहमा है गुरू विष्णु है गुरू महेश्वर है। गुरू साक्षात पर बृहमा है। मतलब गुरू को देखा जाय तो क्या–क्या उपमा दी गयी है। प्राचीन काल से ही गरिमामयी एवं सम्मानीय रहा है। भारतीय परम्परा में गुरू को माता–पिता व ईश्वर से भी अधिक आदर का पात्र माना गया है। इस प्रकार अध्यापक एक सभ्य समाज एवं राष्ट्र के निर्माण की आधार शिला होते है। अनेक महान शिक्षको ने ऐसे अनगिनत व्यक्तियो का निर्माण किया जिन्होने आगे चलकर विस्तृत साम्राज्यो एवं शान्तिपूर्ण समाजो को अस्तित्व प्रदान किया।

हमारी भारतीय संस्कृति में बाल्य काल से ही बृहमचार्य आश्रम की समाप्ति तक बालक गुरू सानिध्य में ही रहता था। गुरूकुल का पारिवररिक कुल से अधिक महत्व था। अध्यापक आज भी राष्ट्र के भविष्य को निर्धारित करने वालो पर अपना प्रभाव रखते है। किसी राष्ट्र के निर्माण में युवा वर्ग की ऊर्जा इच्छाशक्ति कार्यकुशलता नैतिक सुदृढता राष्ट्र के प्रति निष्ठा महत्वपूर्ण आधार सामग्री होती है। आज भी अध्यापक शैक्षिक गतिविधियो के अतिरिक्त सामाजिक सापरिवेश ग्रामीण विकास के प्रति जागरूकता व संस्कृतिक निर्माण में सहायक है।

आज देश की आजादी के पश्चात साक्षरता के विस्तार में असंख्यों अध्यापको का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस बढती साक्षरता के फलस्वरूप किसी राष्ट्र के विकास में बाधक प्रवृतियो (विशेषताओ) रूढिवादी अंधविश्वास नशाखेरी नारी उत्पीडन आदि को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

आज जबकि हमारे देश की आजादी के कुछ समय उपरान्त ही अध्यापकों की भूमिका में कुछ ऐसे परिवर्तन भी दृष्टिगोचर होने लगे। जिन्होने गुरू शिष्य परम्परा को गम्भीर क्षति पहुचायी है। अध्यापक के सम्मान का दायरा तेजी से घटता जा रहा है। राष्टª निर्माण के रूप में उनकी भूमिका क्षीण ही नही बल्कि नकारात्मक भी होती जा रही है।

सबसे पहले तो विद्यार्थी एवं युवा वर्ग में उपभोगवाद स्वच्छदतावाद तथा निराशावाद का शिकंजा निरन्तर कसता सा जा रहा हैं जिससे अध्यापको के प्रति सम्मान की भावना अत्यन्त कमजोर हो चुकी है।

आज जैसा माहौल चल रहा है। पुराने अध्यापको की बातो को अति आदर्शवादी या गैर यथार्थवादी व प्रगतिरोधक माना गया है। आज का युवा वर्ग अध्यापक की बजाय टेलीविजन इंटरनेट गूंगल वाटसऐपस जैसे संचार माध्यमो व अपने आर्दश नेताओ अभिनेताओ एवं राजनीतिज्ञो से ज्यादा प्रभावित रहते है।

अन्तोतगतवा अभिभावको व अध्यापको के मध्य आपसी सम्प्रेषण नगव्य रह गया है। अभिभावक वर्ग आज के हमारे युवाओ के चारित्रिक विकास में अध्यापक की भूमिका को स्वकारने के लिए उत्साहित नही है। माता–पिता द्वारा शिक्षाको को मात्र एक व्यवसाय वर्ग के रूप में देखा जा रहा है। जो निश्चित धनराशि के बदले शैक्षिक ज्ञान उपलब्ध कराता है। अभिभावक वर्ग द्वारा आज अपने नैतिक व सामाजिक उत्तरदायीत्वो से पलायन कर लिया गया है। जातीय धार्मिक राजनीतिक आधारो पर जन्मे विभेदो एवं पूर्वाग्रहो से अध्यापक वर्ग अहूता नही रह गया है। अध्यापक वर्ग का एक बडा हिस्सा आप राजनीतिक गतिविधियो में सक्रिय है। अतः ऐसे अध्यापक अपने आप को हर जगह दिखाने का कार्य करते है। प्रथमिक विद्यालयो से लेकर विश्वविद्यालयो तक को राजनीतिक अखाडा बनाने में अध्यापको की अहम भूमिका है।

आज अध्यापक टयूशन कोचिंग जैसे तरीको से धनोपाजित करने में व्यस्त रहते है। छात्रदकि परीक्षा में नकल कराने नकली अंकपत्र बनाने तथा अवैध शिक्षाको की उपाधिया दिलवाने जैसे अनैतिक कार्यो में भी अनेक अध्यापक संलिप्त हैं अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र निर्माण की बजाय राष्ट्र विभाजक की भूमिका निभा रहे है। अध्यापक का ऐसा वर्ग मौजूद है। जो अध्यापको की गरिमा को संजोये रखने हेतु प्रयासरत है। राजनीतिक गतिविधियो से अध्यापको का अलगाव विद्यार्थियो एवं शिक्षक की सभी प्रकार के सकीर्ण पूर्वाग्रही से मुक्ति रोचक एवं रोजगार परक शिक्षा पद्धति युवाओ में आशावादी एवं नैतिक विचारो के प्रति रूझान पैदा करने वाला वातावरण अध्यापको को अर्थिक आत्मनिर्भता राजनीतिज्ञो एवं अफसरो के प्रभाव क्षेत्र का उन्मूलन अदि निराकरणीय उपाय है। जिको पूरी तरहा से विभिननस्तरो पर क्रियान्वयन नही किया जा सकता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि जब तक इस समाज में शिक्षक हैं। तभी शिक्षण कार्य भी उसी के द्वारा सम्पन्न हो सकता है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि शिक्षक को गुरु के श्रेणी में रखा गया है। यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। जबकि बच्चा उसके माता–पिता व यह समाज शिक्षक पर आँख मूंदकर विश्वास करते थे। जो शिक्षक ने कह दिया। वह सरमाये होता था पर समाज का बहाव तब ने की के पथ पर ज्यादा अग्रसर था पहले सीधे–सच्चे लोग ज्यादा रहते थे। हमारे देश में गरीबी, भुखमरी बेरोजगारी पैसे की कदर भी थी ऐश आराम की जिन्दगी मानव जीता नहीं था, जो तोड़ मेहनत करना व्यक्ति का प्रथम कर्तव्य था।

मानव समाज में संस्कार की कमी होना

1– माता–पिता का आदर करना 2– बड़ों का सम्मान करना 3– अपने से छोटो का आदर, सत्कार करना 4– घर में मेहमान आये तो देवतुल्य मानना, उसके आने पर जी जान लगा देना उसके सेवा सत्कार में, पर आज तो मानव, समाज को भागदौड़ से फुरसत ही नहीं मिलती उसे एक दिन मिलता है तो सभी सरकारी कर्मचारी, या नौकरी करने वाले, या सामाजिक प्राणी आज इतना व्यस्थ हो गया है। वह अपनों के लिए समय भी तो मोबाइल पर ही निकालता है। व्हाटऐप्स, फेसबुक, टयूटर, टिकटोक मेसिज भेजना ये भी तो वह घर के सदस्यों के लिए भी समय निकालने के लिए सोचता है। अगर कोई गलती से घर परिवार में से आ गया तो समझो उसके चेहरे की रौनक चली जाती है। वह सोचता है कि वह बाहर से ही टरका दे तो सुकून मिले ऐसे है आज मानव के विचार तो वह शिक्षक को क्या सम्मान देगा।

शिक्षक ज्ञान प्रदाता

शिक्षक जब ज्ञान प्रदाता है तो उसकी शिक्षाएँ समाज के लिए अनुकरणीय हैं। अब सवाल यह है कि वह समाज की नींव रखने वाले इस व्यक्तित्व को शनैःशनैः विस्मृत क्यों करते जा रहे हैं। हमारी यही कमजोरी आज हमारे लिए घातक सिद्ध हो रही है। जहाँ से हमें ज्ञान मिलता है फिर चाहे वह लौकिक हो या आध्यात्मिक। हमें हमेशा ही उसका आदर करना चाहिए।

आज शिक्षक गुरु कैसे बने

आज शिक्षक जो पहले के गुरु होते थे वो अपने कार्य के प्रति समर्पित रहते थे, शान–शौकत में नहीं रहते थे, दिखावा नहीं करते थे, बच्चों को ज्ञान देना ही उनके जीवन का उद्देश्य होता था सच के लिए अपनी जान की बाजी लगा देते थे। ऐसा बनना है आज के शिक्षक को मानते है कार्य ज्यादा रहता है। पर बच्चों के भविष्य को सुधारने के लिए हमें पूर्णतया तत्पर होकर लगे रहना पड़ेगा कि हम उन्हें सही संस्कार दे पायें उनके जीवन को उज्जवल बना पाये। इस विषय पर मैं अपने विचार प्रस्तुत करना चाहूँगी–

आज के शिक्षक जिसे देश के बच्चों का भविष्य सुधारना है। आज के शिक्षक जिसे देश के बच्चों को सही दिशा में पहुँचाना है। पग–पग चलकर उनके जीवन से काँटों को निकालना है । पग–पग चलकर जितने भी उनके दर्द हैं, पीढ़ायें हैं उन्हे जड़ से निकालना है। पग–पग चलकर उनके जीवन से काँटों को निकालना है। पग–पग चलकर

जहाँ भी उन्हें कष्ट हो अपने सही रास्ते से भटके उन्हें सही रास्ते पर लाना है उनको फौलाद बनाना है। क्योंकि हम उनके भावी शिक्षक हैं उनके जीवन को तरासना है।

शिक्षक, विद्यार्थी और शिक्षा के बदलते संदर्भ

आधुनिक समाज में व्याप्त स्वार्थपरक, मानसिकता दिशाहीन, राजनीति उदारवाद की आंधी तथा मीडिया एवं विभिन्न बढ़ते प्रभाव से हमारे चरित्र एवं व्यवहार में जो खुलापन आया है। उसके परिणाम स्वरूप लोगों के नैतिक मूल्यों का जो अवमूल्यन हुआ है। उसने शिक्षकों की भूमिका और हमारी वर्तमान शिक्षा पद्वति को कटहरे में खड़ा कर दिया है। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् से जिस आदर्शवाद को आधार बनाकर भारत निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई थी। वह छठे दशक तक आते–आते दम तोड़ने लगी।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में परिस्थितियां यह है कि शिक्षा और शिक्षक दोनों बिकाऊ हो गये हैं। अर्थात जिसके पास धन का बल है। वही अच्छी शिक्षा पाने का अधिकारी है। किसी भी सभ्य एवं शिक्षित समाज का निर्माण शिक्षक वर्ग ही करता है। माता–पिता एवं परिवार की प्रारम्भिक के पश्चात् शिक्षक ही होता है। जो बच्चों के अंतःकरण में देश प्रेम, त्याग, समर्पण सेवा आदि की भावनाओं का संचार करता है। भारतीय दर्शन में शिक्षक को गुरु के रूप में सम्मानित किया गया है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की जो स्थिति है। उससे शिक्षकों की भूमिका पर ही प्रश्न चिन्ह लग गया है। पहले जहाँ शिक्षक निःस्वार्थ तथा निष्पक्ष रूप से ज्ञान बाँटकर एक सभ्य एवं ठोस समाज का निर्माण करता था। दुसरी ओर वही आधुनिक शिक्षक अपनी समस्त मर्यादाओं एवं उत्तरदायित्वों को ताक पर रखकर तुच्छ निजी स्वार्थों की पूर्ति में संलिप्त है। वर्तमान भौतिकवादी युग में उनका प्रमुख उद्देश्य किसी भी प्रकार से धन कमाना हो गया है। इसका प्रमाण बढ़ती ट्यूशनखोरी की समस्या के रूप सामने आया। जिससे आज शिक्षा बाजार में बिकने वाली वस्तु के रूप में नजर आने लगी है। अर्थात जिसके पास जितना अधिक धन है। वह उतनी ही अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी है आज हालात यह है कि निर्धन व्यक्ति अपने बच्चों को अच्छी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में भी असमर्थ है। उन्हें डॉक्टर या इंजीनियर बनाना तो खैर उनके स्वप्न की बात भी नहीं है। आज शिक्षक जहाँ अपने सबसे बड़े कर्तव्य–अध्यापन के प्रति उदासीन है तो दूसरी ओर इनका आचरण भी छात्रों में किसी प्रकार प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं।

उदारीकरण एवं भूमण्डलीकरण के वर्तमान दौर शिक्षा के स्वरूप में आगामी 15–20 वर्षों में इतना अधिक परिवर्तन आ जायेगा। कि उसे पहचान पाना ही कठिन होगा। भावी समाज के पुर्ननिर्माण प्रक्रिया में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। परिवर्तन की गति इतनी तीव्र हो गयी है। कि शिक्षा सहित जीवन के किसी क्षेत्र में एक स्पष्ट चित्र बना पाना असम्भव होगा। आज समाज में जिस प्रकार का तनाव व टकराव व्याप्त है। उसमें सामाजिक सम्बद्धता हेतु शिक्षा की आवश्यकताओं पर विशेष बल रहेगा।

आज प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों का लगातार ह्रास हो रहा है। हर कोई भ्रष्टाचार का शिकार हो रहा है। इन परिस्थितियों में केवल शिक्षा ही ऐसा यंत्र है। जिसमें इस प्रवाह की धारा को मोड़ने का सामर्थ्य है। इस प्रकार के मूल्यों की शिक्षा देना और उनके अनुरूप आचरण करना तथा इस सन्दर्भ में प्रत्येक विद्यार्थी की सहायता करने जैसा एक बड़ा उद्देश्य पाठ्यक्रम बनाने वालो को ध्यान में रखना होगा। भविष्य के इस पाठ्यक्रमों में नागरिकों के मौलिक उत्तरदायित्वों का समावेश करना होगा। और भविष्य में बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए। जो उनमें आने वाली चुनौतियों को स्वीकार करने और उनका सामना करने की क्षमता का संचार करे।

ऐसा लगातार और सम्पूर्ण अध्ययन प्रक्रिया में समाविष्ट करना होगा। इन समस्त चुनौतियों का सामना करने हेतु शिक्षक वर्ग को तत्पर रहना होगा। अन्यथा उनके अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह आरोपित हो जायेगा। इन प्रमुख शब्दों के तहत मैं अपने विचार प्रस्तुत करना चाहूँगी।

हम एक नया जहाँ बनायेंगे जिसमें समानता का भाव जगायेंगे सभी गुणकारी मूल्यों को अपनायेंगे बच्चों का भविष्य उज्जवल बनायेंगे हम एक नया जहाँ बनायेंगे नव युवा कलियों को अपनी मुख्य धरा में बहायेंगे हम एक नया जहाँ बनायेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्रो0 बृज किशोर कुठियाला जी माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के कुलपति है तथा उर्वशी पत्रकारिता के संरक्षक वे ख्यातिमान शिक्षाविद तथा विचारक है।

जेडंर स्कूल तथा समाज–डॉ0 दीप्ति जौहरी, प्रकाशक– विनय रखेजा ¼c/o आर0 लाल बुकडिपो½ संस्करण– 2017, पृ0सं– 70–82 तक

निबन्ध बोध– मुख्य संपादक– कल्पना राजा राम, प्रकाशन– स्पेक्टम बुक्स प्रा0लि0 ए 1 जनकपुरी दिल्ली 110058, संस्करण– 2013, पृ0सं0– 87,321,325,332,342, 353,398

बादलता हुआ संघ परिवार– प्रधान सम्पादक अभय कुमार दुबे, सम्पादक– अदित्य निगम, सम्पादकीय सम्पादक– नरेश गो स्वामी, वाणी प्रकाशन– 21 ए दरियागंज नई दिल्ली– 110002, पृ0सं0– 60

बाल विकास– शिक्षा शास्त्र, प्रकाशन वाणी– पृ0सं0 पृ0 60–70

स्टूडेन्टस और मनकी शान्ति– डॉ0 विजय अग्रवाल, वाणी प्रकाशन दिल्ली पृ0सं0– 80–90

प्रकाशन चिन्तन– डॉ0 विजय अग्रवाल, Publisher-Benten Books, पृ0सं0 275 – 280

खुशहाल जीवन के मंत्र– डॉ0 विजय अग्रवाल, Publisher-Benten Books, पृ0सं0 280–290

शिक्षा शास्त्र– एम0डी जफर– राजस्थान के जैनशास्त्र, माराडारो की ग्रन्थ सूचि भाग 04, पृ0सं0 70,80,90,100